Saathi

Date ___/___/______

Name :- Sannu Singh

Roll no :- SKt/17/12

Paper name :- Acting and Script writing.

Paper Code :- 12133901

Year :- 2nd.

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के आधार पर आप संवादो को बतावे ?

संवाद — नाट्यशास्त्रीय ग्रंथो मे 'संवाद' के लिये दो शब्दो का प्रयोग किया गया है
(I) नाट्यधर्म (II) नाट्योक्ति
नाट्यधर्म अर्थात नाट्यशास्त्रीय मर्यादा के अनुरूप प्रयोग की जाने वाली शैली, यह नाट्यधर्मी पद्धति पर आधारित होती है। भावो और विचारो को दर्शको तक पहुँचाने के लिये अभिनेता विशेष प्रकार की भंगिमा और मुद्राओं का सहारा लेता है। जिससे कोई संवाद मंचस्थ पात्रों की दृष्टि से श्राव्य, अश्राव्य और नियतश्राव्य बन जाता है नाट्यधर्म लोकधर्म के विपरीत होता है।
चूँकि यह शैली नाट्यकारों के द्वारा व्यवहार में लाई जाती है ~~इसलिए~~ इसलिये इसे नाट्योक्ति कहते है.

नाट्यधर्म या नाट्योक्ति के आधार पर संवाद के मुख्यत: तीन भेद है
(I) सर्वश्राव्य (II) अश्राव्य (III) नियतश्राव्य

Date __/__/____

सर्वश्राव्य :- सर्वश्राव्य का अर्थ है सभी के द्वारा सुनने योग्य, जब वक्ता अपना कथन मंच पर उपस्थित सभी पात्रों को सुनाना चाहता है उसे सर्वश्राव्य कहते है, सर्वश्राव्य को प्रकाश भी कहा जाता है।

सर्वश्राव्य भावाभिव्यञ्जना के लिये संवादो की मुख्य शैली है। यह नाटको में आद्योपान्त प्रयोग में लायी जाती है। किसी भी नाटक में संवाद का होना नाटक को रोचक बनाती है और सहृदय को अपने ओर आकर्षित करती है। इसलिये संवाद लेखक को ~~संवाद~~ यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक पात्र का आचार-व्यवहार, स्वभाव, शैली, भाषा की दृष्टि से विशेष हो।

उदाहरण के लिये अभिज्ञानशाकुन्तलम् से निम्नलिखित संवाद लिये गये है-

धीवर - मैं मछली पकड़ कर अपने कुटुम्ब का पेट पालता हूँ।

नगरपाल - वस्तुतः बहुत ~~पवि~~ पवित्र आजीविका है।

धीवर :- ऐसा न कहिये, वंश परम्परागत काम निन्दित भी हो तो भी उसे नहीं छोड़ना चाहिये।

इन संवादों के विश्लेषण से स्पष्ट है संवाद सन्तुलित संक्षिप्त, प्रभावी और दोनों पात्रों के व्यक्तित्व का बोध कराने वाला है और प्रस्तुत संवाद सर्वश्राव्य है।

Saathi

Date ___/___/___

अश्राव्य :- अश्राव्य संवाद को स्वगत संवाद भी कहते हैं। इस नाट्यधर्म का व्यवहार गोपनीय भावों की अभिव्यंजना के लिये कराया जाता है। नाटककार इसके लिये 'स्वगतम' या आत्मगतम लिखकर नाट्य संकेत देता है, इस शैली में व्यक्त भावों को रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों से छिपाना अभीष्ट होता है इसलिये रंगमंचस्थ किसी भी पात्र के लिये सुनने योग्य न होने से प्रस्तुत किये गये संवाद अश्राव्य कहलाते हैं।

अश्राव्य संवाद अधिक लम्बी नहीं होनी चाहिये इससे नाटक की गति में अवरोध आ जाता है

उदाहरण - शकुन्तला- (आत्मगतम) बलवान्खलु मेऽभिनिवेश: 'इदानीमपि सहसैतयोर्न शक्नोमि निवेदयितुम

अर्थात शकुन्तला के ज्वर से चिंतित सखियाँ ज्वर का कारण और दुष्यंत के प्रति प्रेम का प्रकाशन उन दोनो के सामने प्रकट करने में संकोच करती है यह संकोच आत्मगत शैली के माध्यम से प्रकाशित किया गया है

नियतश्राव्य :- नियत का अर्थ है. निश्चित और श्राव्य का अर्थ है सुनने योग्य अर्थात मंच पर उपस्थित पात्रों में से कुछ निश्चित व्यक्तियों के लिये ही सुनने योग्य संवाद को नियश्राव्य कहते हैं।

यहाँ ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि दर्शकों के उक्त कथन श्राव्य ही होगी। उसकी नियतता मंचस्थ पात्रों की दृष्टि से ही मानी गयी है।
नियश्राव्य संवादों को प्रस्तुत करने के लिये दो शैलियाँ प्रचलित हैं।

(1) जनान्तिक (2) अपवारित

Saathi

Date __/__/__

* जनान्तिक :- जनान्तिक का शाब्दिक अर्थ है -
" जनानाँ अन्ते मध्ये' या 'जनान् अन्तिके निकटे वा"
अर्थात बहुत से लोगों के बीच या गोपनयोग्य व्यक्तियों के समीप में होने पर।
नाट्यदर्पणकार कहते है कि जनान्तिक के माध्यम से कही गयी बात बहुतों से अगोप्य और एक के प्रति गोप्य रहती है कविगण इसके लिये 'जनान्तिके' नाट्यनिर्देश का प्रयोग करते है।

उदाहरण (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

प्रियंवदा - (जनान्तिकम्) अनसूये! तस्य राजर्षे: प्रथम-दर्शनादरभ्य पर्युत्सुकेव शकुन्तला। किं नु खलु तस्यास्तस्मिन्निमित्तोऽयमातङ्को भवेत्.

अनसूया - सखि! ममापीदृश्याशंका हृदयस्य। भवतु; प्रक्ष्यामि तावदेनाम् (प्रकाशम्) सखि! प्रष्टव्यासि किमपि। बलवान् ते सन्ताप:

प्रस्तुत गद्य में अनुसूया द्वारा शकुंतला से कथ्य को छिपाने के लिये जनान्ति विधि का सहारा लिया गया है

* अपवारित :- अपवारित शब्द का शाब्दिक अर्थ है "हटाया गया" मुख फेरने की भंगिमा से या पीठ करके पात्र-विशेष के लिये संवाद की अश्राव्यता का अभिनय किया जाता है अर्थात किसी पात्र के द्वारा मुँह फेर कर या पीठ करके दूसरे व्यक्ति से गोपनीय बात कही जाती है उसे अपवारित कहते है यहाँ ध्यान रखना आवश्यक है कि दो नियत पात्रों की पारस्परिक बातचीत दर्शकों तक पहुँचना आवश्यक है इसलिये इसमें स्वर पर अधिक ध्यान दिया जाना है।

Date __/__/__

आकाशभाषित :-

आकाशभाषित संवाद की विशिष्ट शैली है। संस्कृत नाटकों में कुछ विशेष अवसरों पर किसी अज्ञात बात को दर्शकों तक पहुँचाने के लिये मंचस्थ एकाकी पात्र द्वारा आकाशभाषित विधि का सहारा लिया जाता है। आकाशभाषित शब्द में आकाश का अर्थ शून्य और भाषित का अर्थ कहा गया कथन अर्थात शून्य में कहा गया कथन।

इसमें उत्तर प्रत्युत्तर के लिये दूसरे पात्र का नितान्त अभाव रहता है दूसरे पात्र का अभाव रहने से इस शैली में उच्चारित वक्तव्य को शून्य में किया गया है कथन कहते है किसी प्रसंग में मंच पर स्थित अकेला पात्र इस प्रकार का अभिनय करता है

अभिज्ञानशाकुंतलम् के तृतीय और सप्तम अंक में आकाश -भाषित की ~~योजना~~ की गई है। आ~~काशयान~~ से दुष्यंत ~~मरीच आश्रम में~~ उतरता हुआ दुष्यन्त मातलि से महर्षि मारीच के दर्शन की अभिलाषा प्रकट करता है

अभिज्ञानशाकुंतलम् के तृतीय और सप्तम अंक में आकाश भाषित की योजना की गई है।

निष्कर्ष :- किसी भी नाट्य में संवाद की अहम् भूमिका होती है संवाद सहृदयों को नाटक की तरफ आकर्षित करता है और किसी भी नाटक को रोमांचक बनाता है।

Harshakumari